Date 29/04/2020 पेपर - IV बी० ए० पार्ट - II | डॉ चन्दा कुमारी ①

चन्द्रगुप्त नाटक - जयशंकर प्रसाद

चन्द्रगुप्त नाटक भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की प्रमुख रचनाओं में से एक है। प्रसाद के नाटक अतीत के कथाचित्रों के द्वारा तत्कालीन राष्ट्रीय संकट को पहचानने और सुलझाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इनके नाटक 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' का सत्ता-संघर्ष राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न से जुड़ा हुआ है। 'चन्द्रगुप्त नाटक' में चाणक्य (विष्णुगुप्त) के नीतियों तथा चरित्र को उल्लेखित किया गया है। चन्द्रगुप्त नाटक की रचना जयशंकर प्रसाद द्वारा 1931 ई० में किया गया है। इसकी कथा वस्तु सिकन्दर के भारत पर 326 ई० पू० में तथा मगध में नन्द वंश के पराभव एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के राजा बनने की ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा है।

जयशंकर प्रसाद ने इस नाटक की रचना भारत के आजादी के पहले की थी जब भारत में स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा था। जयशंकर प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त नाटक' में इतिहास के उस कालखण्ड को नाटकीय घटनाक्रम के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें नंद के अत्याचारी शासन के विरुद्ध चाणक्य के निर्देशन में संघर्ष किया गया और नन्द को पराजित होने के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य को सत्ता सौंपी गई। मगध में नंद वंश का शासन था जो अपने अहंकार एवं क्षुद्र स्वार्थ के कारण सिकन्दर के विरुद्ध पंचनद प्रदेश के शासक पर्वतेश्वर का इसलिए साथ नहीं दे रहा था, क्योंकि उसने नंद की पुत्री कल्याणी से विवाह करना अस्वीकार कर दिया था क्योंकि वह उसे शूद्र मानता था। तक्षशिला नरेश यवनों से

Scanned with CamScanner

रिश्वत लेकर पंचनद प्रदेश पर आक्रमण करने के लिए उन्हें मार्ग दे दिया था, क्योंकि वे पर्वतेश्वर से द्वेषभाव रखते थे। इस षड्यंत्र का पता गुरुकुल के आचार्य चाणक्य एवं मालव के राजकुमार सिंहरण तथा चंद्रगुप्त मौर्य को चल जाता है। आम्भीक की बहिन अलका अपने भाई का विरोध करती है।

चाणक्य सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखना चाहता था। भारत के छोटे-छोटे जनराज्य एक राजा के अधीन होकर शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएं जिससे कोई भी विदेशी आक्रान्ता भारत पर आक्रमण करने का हिम्मत न करें, चाणक्य का सपना चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाने के बाद सफल हुआ।

सिंहरण और अलका के रूप में दो ऐसे पात्र चन्द्रगुप्त नाटक में हैं जो देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हैं। और भारतीय नवयुवकों एवं नवयुवतियों को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा प्रदान करते हैं। देश के लिए अलका अपने भाई एवं पिता का भी परित्याग कर देती है। सिंधु देश की राजकुमारी मालविका अलका की सखी है, उसका हृदय भी देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत है, जयशंकर प्रसाद ने अतीत के पट पर वर्तमान का चित्र प्रस्तुत करते हुए चन्द्रगुप्त नाटक के माध्यम से वर्तमान पीढ़ी के युवकों का आह्वान किया है कि वे देश की स्वतंत्रता के लिए व्यक्तिगत हितों का बलिदान करने को तत्पर रहें।

मगध के राजा नन्द का भोग विलास में लिप्त रहना तत्कालीन राजा-नवाबों की विलासी प्रवृत्ति का द्योतक है। स्वतंत्रता आंदोलन में नारियों की सहभागिता को चंद्रगुप्त नाटक के पात्र अलका, मालविका के द्वारा प्रतिबिम्बित

Scanned with CamScanner

(3)

किया गया है। चंद्रगुप्त और सिंहरण में कुछ लोगों की 'नेहरू' और 'सुभाष' की छवि दिखती है तो गांधी में 'चाणक्य' की। सिकन्दर एवं सेल्यूकस उन अंग्रेज शासकों के प्रतीक माने जा सकते हैं जिनकी नीति साम्राज्यवादी थी। जनता का शोषण एवं अत्याचार ही उनका एकमात्र लक्ष्य था।

जयशंकर प्रसाद ने इस नाटक के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। दाण्ड्यायन जैसे महात्मा सिंकदर के समक्ष झुकने को तैयार नहीं होते और उसे अपने ज्ञान से अभिभूत कर देते हैं तो सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया को यह भारत देश अपना लगता है और वह भारत की महिमा इस गीत में प्रस्तुत करती है – "अरुण यह मधुमय देश हमारा।" प्रसाद की मानवतावादी चेतना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ाती है तथा प्रखर राष्ट्रवाद की पुष्ट करती हुई 'चंद्रगुप्त' को एक सोद्देश्य नाटक के रूप में सामने प्रस्तुत करती है। जिस देश में चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ, चन्द्रगुप्त और सिंहरण जैसे वीर तथा अलका एवं मालविका जैसी देशभक्त बालाएं होंगी वह निश्चय ही अपने को महिमा-मण्डित कर लेगा, यही 'चंद्रगुप्त' नाटक का संदेश माना जा सकता है।